॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

वर्ष : 17 अंक : 24 25 दिसम्बर 2017 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : JaipurCity/250/2015-17 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस 23 दिसम्बर

स्वामी श्रद्धानंद के पदचिन्हों पर न चलने के कारण भारतवर्ष सर्वनाश के कगार पर

-सत्यव्रत सामवेदी

जयपुर 23 दिसम्बर। स्वामी श्रद्धानंद आधुनिक भारत के महामानव थे। उनका जन्म एक पौराणिक परिवार में हुआ था और उनके पिता, दादा सभी ईश्वर भक्त थे। स्वामी श्रद्धानंद के खून में अपने पुरखों की भक्ति थी जो नास्तिक होने के बावजूद विलुप्त नहीं हुई। वे अत्यन्त भावुक थे और एक छोटी सी घटना ने उन्हें नास्तिक बना दिया। बाबा विश्वनाथ के मंदिर में रीवा की राजकुमारी के दर्शन के कारण उन्हें मंदिर में प्रवेश करने से रोक दिया गया। वे इस अपमान को सहन नहीं कर सके क्योंकि इसी वाराणसी में उनके पिताजी पुलिस के प्रमुख थे और सारा शहर उनके प्रति नतमस्तक रहता था और मुंशीराम का जीवन राजकुमारों की तरह व्यतीत होता था। रायबरेली में महर्षि दयानन्द के आगमन पर मुंशीराम के पिताजी ने उनका भाषण सुना और वे मंत्रमुग्ध हो गए। उन्होंने अपने बेटे मुंशीराम से कहा कि एक बहुत बड़े विद्वान आये हैं, उनका प्रवचन सुनकर तुम मंत्रमुग्ध हो जाओगे। पिताजी का मन रखने के लिए वे दयानन्द का भाषण तो सुनने चले गए परंतु उनका यह दृढ़ विश्वास था कि जो आदमी केवल संस्कृत में ही भाषण देता है और ईश्वर और वेदों का प्रचार करता है वह विद्वान कैसे हो सकता है परंतु दयानन्द का भाषण सुनकर उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वे सारी रात तैयार करके दयानन्द जी से ईश्वर के अस्तित्व के बारे में तर्क-वितर्क करते परंतु 5-10 मिनट में ही मुंशीराम निरूत्तर हो जाते। मुंशीराम ने स्वामी जी से कहा कि आपकी तर्कशक्ति बहुत प्रबल है, आपने मुझे तर्क देकर चुप कर दिया परंतु आप यह विश्वास नहीं दिला सके कि ईश्वर का अस्तित्व है। स्वामी जी ने कहा कि तुमने प्रश्न किए मैंने उत्तर दिए। ईश्वर पर विश्वास दिलाने का मैंने कोई प्रयास नहीं किया। तुम्हारा ईश्वर पर विश्वास तब होगा जब तुम पर ईश्वर की कृपा होगी। यही से ही दयानन्द के प्रति मुंशीराम के हृदय में बीजारोपण हुआ और मुंशीराम जो मांसाहारी था, शराबी था, पथभ्रष्ट था वह दयानन्द का परम भक्त बन गया और पंजाब की गली-गली में तम्बूरा बजाता हुआ वेदों का प्रचार करने लगा। मुंशीराम ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि तुम्हारी आग ने न जाने कितने पतितों की बुराइयों को जलाकर भस्म किया यह तो वही ईश्वर जानता है जिनकी गोद में शांति की नींद ले रहे हैं परंतु मैं अपने बारे में जानता हूँ कि मैं क्या था और अब क्या हूँ यह सब आपकी कृपा का फल है।

मुंशीराम एक महान संत बन गया जिनका चरण स्पर्श करने महात्मा गांधी गुरुकुल में आए। ऐसा प्रतीत होता था कि स्वामी श्रद्धानंद भारतवर्ष का प्राण है और उसकी शक्ति से भारतवर्ष पाखण्ड, अंधविश्वास, अज्ञान और ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भयंकर युद्ध कर रहा है।

महात्मा गांधी के राजनीति में पदार्पण से पूर्व सारे भारतवर्ष में गोखले के बाद स्वामी श्रद्धानंद सबसे बड़े नेता माने जाते थे। प्राणिमात्र के प्रति स्वामी में करूणा का भाव था। वे वेद के मनुर्भव के संदेश को कार्यरूप में परिणत करने के लिए समर्पित थे। इसी लिए मुसलमान लोग उन्हें जामा मस्जिद में तकरीर के लिए ले गए और आज तक जामा मस्जिद की दरों दीवारें उस मंत्र से गूंज रही हैं जिसका गान स्वामी जी ने मस्जिद में किया था। त्वं हि न: पिता वसो, त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अथा ते सुम्नमीमहे। ओं शांति: शांति: शांति:। इस घटना से पहले और इसके बाद आज तक किसी गैर मुस्लिम को जामा मस्जिद में तकरीर देने का अवसर नहीं मिला।

रोलेट एक्ट के विरोध में सारे भारतवर्ष की मुर्दा धमनियों में शौर्य का रक्त प्रवाह करने वाले स्वामी श्रद्धानंद थे। जब सारे देश का दौरा करके स्वामी जी दिल्ली आए तो दिल्ली सोया हुआ था, दिल्ली ठण्डी, निर्वीर्य, निष्प्राण थी। स्वामी जी ने दो-तीन दिन में ही अपने ओजस्वी भाषणों से दिल्ली को दावानल बना दिया। दिल्ली के चांदनी चौक में मशीनगनें लगा दी गईं और मिलिट्री ने चौक को घेर लिया। स्वामी जी चांदनी चौक गए जहां पर 50 हजार लोग थे। मिलिट्री वालों ने उनके सीने पर बंदूकें तान दी और स्वामी जी ने अपनी छाती खोलते हुए कहा कि चलाओ गोली। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने इस दृश्य का वर्णन करते हुए लिखा कि छह फुट लम्बे संन्यासी जब अपना सीना तान कर गोली चलाने के लिए ललकारते हैं, इस दृश्य को याद करके कौन रोमांचित नहीं होगा।

स्वामी श्रद्धानंद दलितों के मसीहा थे। उन्होंने ही सबसे पहले दलितोद्धार की आवाज उठाई। जलियावाला कांड के बाद अमृतसर में आयोजित राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सर्वप्रथम हिन्दी में भाषण देते हुए स्वामी जी ने कहा-

'लंदन नगर में भारत की रिफार्म-स्कीम-कमेटी के सामने ईसाई-मुक्ति-फौज के वूथ टकर साहब ने कहा था कि भारत के साढ़े छ: करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहियें और उसके लिये हेतु दिया था- क्योंकि वे भारत में वृटिश गवर्नमेन्ट रूपी जहाज के लंगर हैं। इन शब्दों पर गहरा विचार कीजिये और सोचिये कि किस प्रकार आपके साढ़े छ: करोड़ भाई, आपके जिगर के टुकड़े, जिन्हें आपने काट कर फेंक दिया है, किस प्रकार भारतमाता के साढ़े छह करोड़ पुत्र एक विदेशी गवर्नमेन्ट रूपी जहाज के लंगर बन सकते हैं। मैं आप सब बहिनों और भाइयों से एक याचना करूंगा। इस पवित्र जातीय मंदिर में बैठे हुए अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेमजल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि- 'आज सेवे साढ़े छ: करोड़ हमारे लिए अछूत नहीं रहे बल्कि हमारे बहिन और भाई हैं। उनकी पुत्रियां और उनके पुत्र हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे। उनके गृहस्थ नर-नारी हमारी सभाओं में सम्मिलित होंगे। हमारे स्वतंत्रता प्राप्ति के युद्ध में वे हमारे कन्धे से कन्धा जोड़ेंगे और हम सब एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए ही अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे।' हे देवियों और सज्जन पुरुषों! मुझे आशीर्वाद दो कि परमेश्वर की कृपा से मेरा यह स्वप्न पूरा हो।'

स्वामी जी का शुद्धि कार्य- स्वामी जी ने देश और धर्म को बचाने के लिए शुद्धि सभा का गठन किया। उनकी दृष्टि में जब मुस्लमान और ईसाई हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करने के लिए स्वतंत्र हैं तो हिन्दू जिसने तलवार के बल पर धर्म परिवर्तन किया था वह पुन: हिन्दू क्यों नहीं बन सकता परंतु समस्या यह थी कि हिन्दू जड़ता, अंधविश्वास और अज्ञान से ग्रस्त था। वह सदियों से विदेशी आक्रांताओं से मौत के गाल में समाता रहा, उनकी बेटियों को विधर्मी उठाकर ले जाते रहे, हिन्दू विधर्मियों का भोग का साधन हो गया परंतु वह जड़ता,

गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली आर्य समाज की देश को सबसे बड़ी देन है-महात्मा गांधी

अंधविश्वास और पाखण्ड को छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। मुसलमान संगठित है, सिख संगठित है, सारे सम्प्रदाय संगठित हैं परंतु हिन्दू संगठित होने के लिए तैयार नहीं। उसमें वहीं छूत-छात की भावना, वहीं ऊंच-नीच के विचार, वही जातिवाद। किसी हिन्दू ने मुसलमान के हाथ का पानी

पी लिया तो वह हिन्दू नहीं रह सकता। इसी जड़ता ने करोड़ों हिन्दुओं को मुसलमान बना दिया और हिन्दू ने अपने धर्म को जला कर राख करने के लिए शमशान में अग्नि जला दी। स्वामी श्रद्धानंद ने इस शमशान की अग्नि को बुझाने का प्रयास किया और इसमें सबसे अधिक बाधक बने तिलकधारी हिन्दू। स्वामी श्रद्धानंद ने इन जड़बुद्धि हिन्दुओं की कोई परवाह नहीं की और लाखों अस्पृश्य समझी जाने वाली जातियों को और राजपूतों को हिन्दू बनाया और अपने घर में वापस ले आए। स्वामी जी के इस कार्य ने मुसलमानों को उनका शत्रु बना दिया और वे स्वामी जी के खून के प्यासे हो गये। स्वामी जी के विरुद्ध जो मुसलमानों की आग भड़कती जा रही थी उसे और तेज करने के लिए महात्मा गांधी और उनके साथियों ने भी आहुति देना शुरू किया और वे स्वामी श्रद्धानंद के कट्टर आलोचक बन गए। कराची से असगरी बेगम अपने दो बच्चों और भतीजे के साथ दिल्ली आई और स्वामी जी के आशीर्वाद से वह हिन्दू बन गई उसका नाम शांति देवी रखा गया और उसे वनिता आश्रम में भेज दिया गया। तीन मास बाद उसके पिता मौलवी ताज मोहम्मद खां और उसके पति अब्दुल हलीम भी आ गए। दोनों ने असगरी को पुन: इस्लाम धर्म स्वीकार कर वापस चलने का आग्रह किया परंतु उसने मना कर दिया। इस घटना से कट्टरवादी मुसलमान स्वामी जी के दुश्मन बन गये और उनकी हत्या करने का अवसर ढूंढ़ने लगे। इन दिनों स्वामी जी बीमार थे और आराम कर रहे थे। 23 दिसम्बर को एक आदमी स्वामी जी के दर्शन के बहाने ऊपर आ रहा था और स्वामी जी से मिलने की जिद कर रहा था। स्वामी जी के सेवक ने उसे रोका और कहा कि अभी वे बीमार हैं बाद में आना। पर वह मिलने की जिद करता रहा। स्वामी जी ने जब उस व्यक्ति की आवाज को सुना तो कहा- कौन है, अंदर आने दो। अंदर आकर उसने स्वामी जी से कहा- स्वामी जी मैं आपसे इस्लाम के मुत्तलिक कुछ गुफ्तगूं करना चाहता हूँ। स्वामी जी ने उत्तर दिया- भाई, मैं बीमार हूँ, तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊंगा तो बातचीत करूंगा। पानी मांगने पर स्वामी जी के आदेश से सेवक ने उसको पानी पिला दिया।

पानी पीकर भीतर आते ही उस हत्यारे ने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर पिस्तौल दाग दी। आंख की एक झपक में दो फायर हो गए। लपक कर सेवक ने हत्यारे को पीछे से पकड़ा इतने में उसने तीसरा फायर भी कर दिया। स्वामी जी के सेवक धर्मसिंह और उनके भक्त धर्मपाल विद्यालंकार ने हत्यारे को पकड़ लिया।

गुवाहाटी में कांग्रेस अधिवेशन चल रहा था और गांधी जी एवं कांग्रेस के नेताओं ने स्वामी श्रद्धानंद को कांग्रेस के अधिवेशन में आने के लिए बहुत आग्रह किया परंतु अस्वस्थ होने के कारण वे नहीं जा सके परंतु उन्होंने अधिवेशन के लिए एक संदेश भेजा। इस संदेश भेजने के बाद अब्दुल रशीद नामक मुसलमान ने स्वामी जी की हत्या कर दी। यह संदेश भी गांधी जी के पास पहुंचा। बड़े-बड़े नेता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, राजगोपालाचार्य, सरोजनी नायडू आदि नेता मंच पर बैठे हैं और गांधी जी रूंधे कंठ से घोषणा करने लगे कि अभी-अभी दिल्ली से दो समाचार मिले हैं। पहला समाचार है स्वामी जी का संदेश जिसमें उन्होंने लिखा है कि भारत का भविष्य हिन्दू-मुस्लिम एकता पर निर्भर है। जिन्हें मुसलमानों का सबसे बड़ा शत्रु माना जाता था उसके द्वारा भेजा गया यह संदेश सबको विस्मित करने वाला था और सारा पंडाल श्रोताओं-दर्शकों की तालियों से गूंजने लगा। फिर गांधी जी दूसरा संदेश देने के लिए जब बोलने लगे तो उनका गला फिर रूंध गया और वे बोल नहीं पा रहे थे। बड़ी मुश्किल से धैर्य धारण करके उन्होंने संदेश दिया कि एक मुसलमान ने स्वामी जी की हत्या कर दी। सारा अधिवेशन विषाद के सागर में डूब गया और नेताओं की श्रद्धांजलियां प्रारंभ हो गईं उसके बाद अधिवेशन स्थगित हो गया। सारे देश में स्वामी श्रद्धानंद की हत्या का समाचार सुनकर मातम छा गया और दिल्ली में जो स्वामी जी की विशाल शवयात्रा थी ऐसी शवयात्रा आज तक किसी सम्राट की भी नहीं निकली।

परंतु स्वामी जी की रोमांचित करने वाली इन घटनाओं से भी अधिक महत्वपूर्ण घटना वह है जब उन्होंने देश में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए वैदिक संस्कृति पर आधारित गुरुकुलों की स्थापना की। स्वामी जी की मान्यता थी कि मैकाले की शिक्षा पद्धति ने सारे भारतवर्ष को दोगला अंग्रेज बना दिया है। मैकाले की नैतिकताविहीन शिक्षा प्रणाली देश का सर्वनाश करेगी। स्वामी श्रद्धानंद इस बात पर हमेशा जोर दिया करते थे कि चरित्र निर्माण के बिना देश कभी भी नहीं उठ सकता। 1907 में जब कांग्रेस के गरम दल व नरम दल में युद्ध चल रहा था तब स्वामी जी ने ललकारते हुए कहा- अधिकार, अधिकार। तुमने किन गिरे

हुए शिक्षणालयों में शिक्षा प्राप्त की है। जब दुशासन भारतमाता के बाल खींच रहा हो उस समय अधिकार की बात करना शर्म की बात है। क्या तुमने कर्त्तव्य का पाठ कहीं नहीं सीखा। मेरी दृष्टि में भारत को आजाद कराना इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना भारतवासियों का चरित्र निर्माण। देश की आजादी को 50 वर्ष के लिए स्थगित किया जा सकता है। यदि चरित्रहीन लोगों के हाथ में आजादी आ गई तो देश का क्या भविष्य होगा। अत: हमारी सारी शक्ति चरित्र निर्माण में लगनी चाहिए।

स्वामी श्रद्धानंद जी ने राष्ट्र के चरित्र निर्माण के लिए गुरुकुलों की स्थापना की जिसे देखने के लिए विश्व के सारे शिक्षा शास्त्री आए। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री रेमजे मेकडोनाल्ड गंगा पार करके जंगलों में स्वामी श्रद्धानंद के दर्शन करने गए। इंग्लैण्ड जाकर मेकडोनाल्ड ने कहा कि मैंने भारत में एक अद्भुत व्यक्ति के दर्शन किए हैं। यदि आधुनिक चित्रकार ईसा का चित्र बनाना चाहे तो मुंशीराम को देखकर जो चित्र बनेगा वह ईसा का होगा। यदि मध्यकालीन चित्रकार सेंट पीटर का चित्र बनाना चाहे तो वह मुंशीराम का दर्शन करने के बाद जो चित्र बनाएगा वह सेंट पीटर का चित्र होगा परंतु मैं दावे से कह सकता हूँ कि सेंट पीटर मुंशीराम के सामने मछियारा लगता है। इस गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने लाल लाजपत राय सरीखे गरम से गरम, पं. मोतीलाल जी नेहरू, पं. मदनमोहन मालवीय, भारत

कोकिला सरोजनी नायडू, शांति निकेतन के संस्थापक रविन्द्र नाथ टैगोर आदि नेताओं को तो अपनी और आकृष्ट किया ही परंतु महात्मा गांधी ने इसे आर्य समाज की सर्वोत्तम उपलब्धि माना था और देशभक्ति का मंदिर घोषित किया। देश के सारे महान नेता गुरुकुल की गोद में आकर देश की आजादी के सपने लिया करते थे। रेमजे मेकडोनाल्ड ने यह कहा कि 1835 में मैकाले द्वारा प्रवर्तित भारतीयों को दोगला अंग्रेज बनाने वाली अनैतिकतापूर्ण शिक्षा पद्धति की आलोचना तो सभी करते हैं परंतु उसका रचनात्मक विकल्प केवल मुंशीराम ने दिया है। ऐसे गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त स्नातक ही भारतवर्ष को पुन: विश्वगुरु बना सकते हैं। गुरुकुल की पहली विशेषता यह है कि वह स्वायत्त है। न वो सरकार से कोई सहायता लेती है और न ही किसी सरकारी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। प्राचीन ब्रह्मचर्याश्रम पद्धति तथा गुरु-शिष्य सम्बन्ध को पुनर्जीवित करना दूसरी विशेषता है। भारतीय सभ्यता के मूल मंत्र सादा जीवन तथा उच्च विचार को जीवन का एक हिस्सा बनाते हुए नष्टप्राय भारतीय संस्कृति का पुनरुद्धार करना इसकी तीसरी विशेषता है। मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा हिन्दी द्वारा उच्च से उच्च शिक्षा देना गुरुकुल की अपनी चौथी विशेषता है। पश्चिम के विज्ञान के साथ भारत के वैदिक संस्कृत विज्ञान का मिश्रण करना और वैदिक साहित्य का पुनरुद्धान करना पांचवीं विशेषता है। समाज सुधार को जीवन के साथ तन्मय करते हुए रूढ़ी तथा परम्परा की जड़ काटना छठी विशेषता है। बाल विवाह और जात-पात सरीखी हिन्दू समाज में घर की हुई कुरीतियों का गुरुकुल ने पूरी सफलता के साथ मुंह काला किया है। उच्च से उच्च बालकों के साथ नीच से नीच समझी जाने वाली जातियों के बालक बिना किसी भेदभाव के एक साथ रहते और शिक्षा प्राप्त करते हैं। समान भोजन, समान वस्त्र और समान व्यवहार गुरुकुल की सातवीं विशेषता है। धनी-निर्धन के भेदभाव को भी गुरुकुल ने मिटा दिया है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस शिक्षा प्रणाली में साम्प्रदायिकता का कोई स्थान नहीं है। इन गुरुकुलों से निकले हुए स्नातकों ने देश की आजादी के लिए जीवन समर्पित कर दिया और क्रांति के घोष से भारत के आकाश को गुंजा दिया परंतु आज मैकाले की शिक्षा पद्धति की पताका हर गली और मोहल्ले में लहरा रही है। सारा देश मैकाले की शिक्षा पद्धति द्वारा संचालित अंग्रेजी मीडियम के स्कूलों में अपने बच्चे भेजकर लाखों रुपया खर्च कर रहा है। यही हमारे देश के पतन का कारण है। अत: आर्य समाज का यह दायित्व है कि वह मोदी सरकार पर दबाव डाले कि मैकाले की शिक्षा पद्धति को हमेशा के लिए दफना दिया जाए। यही स्वामी श्रद्धानंद के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

चहेती फर्मों से महंगा कागज खरीद रहा राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल...

केन्द्र के खिलाफ जा खरीदा महंगा पेपर, लगाई 21 करोड़ की चपत

जयपुर। केन्द्र सरकार की ओर से निर्धारित दरों के खिलाफ जाकर राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल पिछले 2 साल सेपंजाब की चहेती फर्मों से महंगा पेपर खरीद रहा है। केन्द्र सरकार जो पेपर वर्षों तक सुरक्षित रखा जाने वाला गजट छपवाने के लिए भी नहीं खरीदती, उसे किताबों के लिए खरीदकर मण्डल सरकारी खजाने को अब तक 21 करोड़ की चपत लगा चुका है।

मण्डल यह कारनामा वर्जिन पल्प की आड़ में किया। यह कागज स्कूलों में नि:शुल्क दी जाने वाली किताबें छापने में किया गया, जो सिलेबस में बदलाव सहित अन्य कारणों के चलते कम ही समय तक काम आती हैं। वर्जिन पल्प का पेच खुद मण्डल के उच्चाधिकारियों ने लगाया। जबकि डीजीएसएंडडी ने सभी के लिए पेपर की किस्म आईएसआई मार्का 1848-2007 को ही पर्याप्त बताया है। मण्डल की पत्रावली में भी लेखा शाखा ने जिक्र किया था कि 10898 टन पेपर की खरीद से ही विभाग को 6.50 से 7.20 करोड़ रुपए तक की चपत लगेगी। मण्डल में गड़बड़ी का खेल यहां भी नहीं थमा और इस साल 24 हजार टन पेपर और खरीद लिया गया।

कहां कौन सा पेपर आ रहा काम- केन्द्र सरकार के लगभग सभी विभागों और करीब आधा दर्जन राज्यों को छोड़ सभी सरकारी विभाग व राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डलों में किताबों की छपाई के लिए रिसाइकल और बीआईएस (ब्यूरो ऑफ इण्डियन स्टैण्डर्ड) 1848-2007 के द्वारा निर्मित कागज का ही उपयोग किया जा रहा है।

गंभीर सवाल : खरीद में वर्जिन पल्प, मगर जांच सामान्य- चहेती फर्मों सेपेपर खरीद के लिए कागजों में वर्जिन पल्प एवं उच्च गुणवत्ता का नाम लिया जा रहा है जबकि खरीदे गए पेपर की जांच उत्तर प्रदेश के सहारनपुर प्रयोगशाला में तय मापदण्ड बीआईएस 1848-2007 के अनुसार ही कराई जा रही है। यह जिक्र मण्डल की पत्रावली में भी है। जबकि इस मापदण्ड का पेपर डीजीएस एण्ड डी में 6 हजार रुपए प्रति टन सस्ता मिल रहा है।

यूं होती है पेपर खरीद...

पेपर की दरें केन्द्र सरकारकी डीजीएसएंडडी की ओर से पेपर मिलों से टेण्डर लेने के बाद देशभर के लिए तय की जाती हैं। इसी के आधार पर पाठ्य पुस्तक मण्डल पंजाब की 3 फर्मों से 52359.67 रुपए प्रति टन पेपर खरीद रहा था। इसमें डीजीएसएंडडी से तय प्रति टन 47032.26 रुपए और टैक्स, ड्यूटी, किराया, वाटरमार्क चार्ज को शामिल कर 52359.67 रुपए प्रति टन दर निर्धारित की गई। पिछले साल इसी दर पर 17500 टन पेपर की खरीद की गई। इसी बीच तीनों कंपनियों का कॉन्ट्रेक्ट समाप्त हो गया और देशभर में डीजीएसएंडडी ने पेपर की दर 44500 रुपए टन कर दी थी। इसमें एक्साइज ड्यूटी भी शामिल थी। ऐसे में किराया, वाटरमार्क और अन्य चार्ज शामिल कर यह कीमत 47000 रुपए टन तय हुई, जो पहले के मुकाबले साढ़े 5 से 6 हजार रुपए कम थी।

यूं घूमी फाइल

दरें कम होने के बावजूद मण्डल ने पिछले साल तत्काल कागज की जरूरत और वर्जिन पल्प पेपर की आवश्यकता बता 10898 रुपए प्रति टन पेपर बिना टेंडर खरीदा। फिर 2017 में भी 24 हजार टन पेपर खरीदा। ऐसे में वर्ष 2016 ओर 2017 में 5 से 6 हजार रुपए टन की अधिक कीमत देकर 30 हजार टन पेपर खरीद लिया गया। इससे सरकारी खजाने को 21 करोड़ की चपत लगी है।

यूं हो रहा नुकसान

2016 में करीब 11 हजार टन पेपर खरीदा मण्डल ने।

03 फर्म पंजाब की, जिनसे की खरीद।

2017 में लगभग 24 हजार टनप्रपर प्रति टन 6 हजार रुपए महंगा खरीदा।

21 करोड़ से ज्यादा की चपत लगा चुका है मंडल।

ऐसे तैयार होता है कागज

वर्जिन पल्प	वुड पल्प	रिसाइकल पेपर
चावल, गेहूं की भूसी व सरकण्डा	पेड़ों की लकड़ी	सभी प्रकार का पुराना पेपर शामिल

(तीनों प्रकार का पेपर होने के बाद इसकी पहचान करना आसान नहीं है कि कौन सा पेपर किससे बना है)

निजी स्कूलों के खिलाफ कार्रवाई की तैयारी...

फीस अधिनियम की पालना नहीं तो मान्यता होगी रद्द

बीकानेर। राज्य में निजी स्कूलों से राजस्थान विद्यालय फीस अधिनियम-2016 के तहत शुल्क निर्धारण की रिपोर्ट अभी तक माध्यमिक शिक्षा निदेशालय को नहीं मिली है। स्कूलों में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर फीस निर्धारित कर रिपोर्ट जिला शिक्षा अधिकारी को भेजनी थी। इस कानून के तहत निर्धारित फीस अगले शैक्षणिक सत्र से लागू की जाएगी। फीस का निर्धारण अगला सत्र शुरू होने के छह माह पहले प्राइवेट स्कूल पोर्टल पर अपलोड किया जाना है, लेकिन विद्यालयों की फीस अभी तक निर्धारित नहीं की गई है। जनवरी-2018 तक फीस निर्धारित कर पोर्टल पर अपलोड नहीं करने वाले विद्यालयों की मान्यता भी रद्द हो सकती है। शिक्षा निदेशालय ने अधिनियम के प्रावधान एवं प्रपत्र दो बार विद्यालयों कोजारी किए हैं। विद्यालय स्तरीय फीस निर्धारण समिति प्रबंधन की ओर से निर्दिष्ट व्यक्ति की अध्यक्षता में समिति गठित करने का प्रावधान है। इसमें प्राचार्य समिति का सचिव तथा 3 अध्यापक सदस्य होंगे। माता-पिता अध्यापक संगम के पांच लोग भी समिति के सदस्य होंगे। समिति की वर्ष में कम से कम एक बार बैठक 15 अगस्त से पूर्व होना अनिवार्य है। संभागीय आयुक्त की अध्यक्षता में मण्डल स्तरीय समिति होगी। इसमें माध्यमिक शिक्षा के उप निदेशक अध्यक्ष होंगे। राज्य स्तरीय कमेटी की पहली बैठक 27 दिसम्बर को होगी। शिक्षक-अभिभावक फीस का अनुमोदन करेंगे। जिला शिक्षा अधिकारियों को यह रिपोर्ट निदेशालय को भेजी जानी थी।

राज्य के प्राइवेट स्कूलों को अगले शैक्षणिक सत्र से छह माह पहले राजस्थान विद्यालय फीस अधिनियम-2016 के प्रावधान लागू करने के निर्देश जारी किए हैं। ऐसा नहीं करने वाले विद्यालयों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

-नथमल डिडेल, *निदेशक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय*

फीस अधिनियम के विरुद्ध राजस्थान उच्च न्यायालय में याचिका

स्वयंसेवी शिक्षण संस्था संघ के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने घोषणा की है कि फीस अधिनियम को निरस्त कराने के लिए याचिका तैयार हो गई है और शीघ्र ही इसे राजस्थान उच्च न्यायालय में प्रस्तुत किया जाएगा। सामवेदी जी का कहना है कि जब संस्थाएं सरकार से किसी प्रकार का अनुदान नहीं लेती तब सरकार को संस्थाओं में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है और न ही वह संस्थाओं की फीस निर्धारित करने के लिए कोई अधिनियम बना सकती है। सामवेदी ने संस्थाओं से आग्रह किया है कि प्रत्येक उच्च माध्यमिक विद्यालय 2000 रुपया का आर्थिक सहयोग दें क्योंकि उच्च न्यायालय में वाद के लिए बहुत खर्च होता है।

सामवेदी ने सरकार को चेतावनी दी है कि यदि शिक्षा राज्य मंत्री वासुदेव देवनानी को नहीं हटाया गया तो आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा की विजय संदेहास्पद होगी।

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस समाचार पत्रों के दर्पण में

स्वामी श्रद्धानंद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक

जयपुर। राजापार्क स्थित आर्य समाज के सत्संग हॉल में शनिवार को स्वामी श्रद्धानंद के बलिदान दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में वक्ताओं ने

पंजाब केसरी

स्वामी श्रद्धानंद के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे। 31 मार्च 1919 को रोलेट एक्ट के विरोध में सारे भारतवर्ष में जो उग्र आंदोलन हुआ उसकी प्रेरणा के स्त्रोत स्वामी श्रद्धानंद थे। स्वामी श्रद्धानंद ने ही सर्वप्रथम उत्तर भारत में स्त्री शिक्षा का सूत्रपात किया और आज छात्राओं के हजारों विद्यालयों और महाविद्यालयों पर उनकी कीर्ति की पताका फहरा रही है। जस्टिस पानाचन्द जैन ने कहा कि स्वामी जी सत्यनिष्ठ थे और चरित्र को सर्वाधिक महत्व देते थे। वे पेशे से वकील थे परंतु जब उन्होंने यह देखा कि वकालत सत्य के आधार पर नहीं चल सकती तो उन्होंने वकालत छोड़ दी। पूर्व आईएएस सत्यनारायण सिंह ने कहा कि स्वामी जी ने सर्वप्रथम दलितोद्धार का कार्यक्रम चलाया और कांग्रेस में दलितोद्धार का कार्यक्रम स्वामी जी की प्रेरणा से ही प्रारंभ हुआ। आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि स्वामी जी ने नैतिकताविहीन शिक्षा का उन्मूलन कर वैदिक संस्कृति पर आधारित गुरुकुलों की स्थापना की थी। वैदिक कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने बाल विवाह और महिला सशक्तिकरण पर अत्यंत प्रभावी नाटक प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी में उपस्थित अतिथि।

स्वामी श्रद्धानंद चरित्र को सर्वाधिक महत्व देते थे-पानाचंद जैन

जयपुर। आज आर्य समाज के सत्संग हॉल में स्वामी श्रद्धानंद के बलिदान दिवस पर प्रसिद्ध व्यंग्यकार अशोक

राष्ट्रदूत

राही, राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति पानाचन्द जैन, पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी सत्यनारायण सिंह, प्रसिद्ध साहित्यकार नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' एवं आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने स्वामी श्रद्धानंद के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

पूर्व जस्टिस पानाचन्द जैन ने कहा कि स्वामी जी सत्यनिष्ठ थे और चरित्र को सर्वाधिक महत्व देते थे। वे पेशे से वकील थे परंतु जब उन्होंने यह देखा कि वकालत सत्य के आधार पर नहीं चल सकती तो उन्होंने वकालत छोड़ दी। आज वकालत का धंधा झूठ का धंधा बन गया है। स्वामी जी कभी भी झूठे मुकदमे की पैरवी नहीं करते थे। स्वामी जी का जीवन यह प्रेरणा देता है कि न्यायपालिका में सत्य का वर्चस्व हो और न्याय के लिए न्यायपालिका में क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है।

पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी सत्यनारायण सिंह ने कहा कि स्वामीजी ने सर्वप्रथम दलितोद्धार का कार्यक्रम चलाया और कांग्रेस में दलितोद्धार का कार्यक्रम स्वामी जी की प्रेरणा से ही प्रारंभ हुआ। अशोक राही ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे। 31 मार्च 1919 को रोलेट एक्ट के विरोध में सारे भारतवर्ष में जो उग्र आंदोलन हुआ उसकी प्रेरणा के स्त्रोत स्वामी श्रद्धानंद थे। 31 मार्च को चांदनी चौक में ब्रिटिश फौज की मशीनगनों के सामने सीना तानते हुए स्वामी जी छाती खोलते हुए कहा 'लो चलाओ गोली' परंतु स्वामी जी की सिंह गर्जना सुनकर और उनके उन्नत वक्षस्थल को देखकर मशीनगनें नतमस्तक हो गईं।

आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि स्वामी जी ने भारतीयों को दोगला अंग्रेज बनाने वाली नैतिकताविहीन शिक्षा का उन्मूलन कर वैदिक संस्कृति पर आधारित गुरुकुलों की स्थापना की जिसमें राजा से लेकर रंक तक सबके लिए समान शिक्षा पद्धति थी। स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस के अवसर पर संस्कृति युवा संस्था के अध्यक्ष पंडित सुरेश मिश्रा ने शिक्षा के क्षेत्र में सत्यव्रत सामवेदी के विशेष योगदान के उपलक्ष्य में राजस्थान गौरव सम्मान से सम्मानित किया। आज वैदिक कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने बाल विवाह और महिला सशक्तिकरण पर अत्यंत प्रभावी नाटक प्रस्तुत किया।

उत्तर भारत में स्त्री शिक्षा के सूत्रधार रहे स्वामी श्रद्धानंद

जयपुर 23 दिसम्बर। राजापार्क स्थित आर्य समाज के सत्संग हॉल में स्वामी श्रद्धानंद के बलिदान दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर आयोजित गोष्ठी में व्यंग्यकार अशोक राही

डेली न्यूज़

ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे। रोलेट एक्ट के विरोध में भारतवर्ष में जो उग्र आंदोलन हुआ, उसकी प्रेरणा के स्त्रोत स्वामी श्रद्धानंद थे। उन्होंने ही सबसे पहले उत्तर भारत में स्त्री शिक्षा का सूत्रपात किया और आज छात्राओं के हजारों विद्यालयों और महाविद्यालयों पर उनकी कीर्ति की पताका लहरा रही है।

वकालत का किया त्याग

वहीं जस्टिस पानाचंद जैन ने कहा कि स्वामी सत्यनिष्ठ थे और चरित्र को सर्वाधिक महत्व देते थे। वे पेशे से वकील थे, परंतु जब उन्होंने यह देखा कि वकालत सत्य के आधार पर नहीं चल सकती तो उन्होंने वकालत छोड़ दी। आज वकालत झूठ का धंधा बन गया है। जैन ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद कभी भी झूठे मुकदमे की पैरवी नहीं करते थे।

उच्च शिक्षा में हिंदी को माध्यम बनाना क्रांतिकारी कदम

इस मौके रिटायर्ड आईएएस सत्यनारायण सिंह ने कहा कि स्वामी जी ने सर्वप्रथम दलितोद्धार का कार्यक्रम चलाया और कांग्रेस में दलितोद्धार का कार्यक्रम स्वामी जी की प्रेरणा से ही शुरू हुआ। सिंह ने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर स्वामी श्रद्धानंद से बहुत प्रभावित थे। साहित्यकार नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' ने कहा कि हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने में सर्वाधिक योगदान स्वामी श्रद्धानंद का है। उच्च शिक्षा में हिन्दी को माध्यम बनाना उनका क्रांतिकारी कार्यक्रम था। जबकि आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि स्वामी जी ने भारतीयों को दोगला अंग्रेज बनाने वाले नैतिकता विहीन शिक्षा को हटाकर वैदिक संस्कृति पर आधारित गुरुकुलों की स्थापना की, जिसमें राजा से लेकर रंक तक सबके लिए समान शिक्षा पद्धति थी।

आधी आबादी को सुरक्षा देने के उद्देश्य से कानून तो कई बने और उन्हें और सख्त भी किया जाता रहा है लेकिन आंकड़े बता रहे हैं कि अपराध कम होने की बजाय बढ़े ही हैं। बाहर तो क्या घर में भी स्त्रियां सुरक्षित नहीं हैं। आपराधिक घटनाओं को दबाया व छिपाया जाता रहा है। दु:खद तो यह है कि समाज इन मामलों में चुप्पी साधे रहता है।

'उनकी' सुरक्षा पर समाज मौन क्यों?

डॉ. ज्ञानप्रकाश पिलानिया
राज्यसभा के पूर्व सदस्य, राजस्थान के पुलिस महानिदेशक रह चुके हैं।

यह विडंबना ही है कि सीता और सावित्री के देश भारत में, महिलाओं के साथ होने वाली दुष्कर्म, लूट, छीनाझपटी, छेड़छाड़, अपहरण जैसी घटनाएं ही नहीं छोटी-छोटी बच्चियां तक निशाने पर हैं। ये बाहर ही नहीं अपनेघर में भी सुरक्षित नहीं हैं। किसके साथ कब क्या घटना हो जाए कोई नहीं जानता। आज, देश की आधी आबादी के लिए हवाई जहाज हो या ट्रेन, स्कूल-कॉलेज हो या घर, सभी सुरक्षित जान पड़ते हैं। अकेली महिला चाहे टैक्सी में सफर करे या सड़क पर पैदल निकले, उसकी अस्मिता पर कब, कौन हाथ डाल देगा, कोई नहीं जानता। पिछले दिनों की दो घटनाएं तो रौंगटे खड़े कर देने वाली हैं। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित एक फिल्म अभिनेत्री (नाबालिग) जायरा वसीम के साथ दिल्ली से मुंबई की उड़ान में सहयात्री ने छेड़छाड़ की। घबराई अभिनेत्री ने मुंबई पहुंचकर सोशल मीडिया पर घटना का वीडियो डाला, तब हलचल हुई। अब नागरिक उड्डयन मंत्री ने कहा कि विमान में अभद्र हरकत करने वाले को नो-फ्लाइट लिस्ट में डाला जा सकता है। इससे क्या दुष्कर्मियों का दुस्साहस कम हो जाएगा? हालांकि मुंबई पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है। दूसरी वारदात में लखनऊ के सरोजनी नगर में ब्लड कैंसर से पीड़ित एक युवती के साथ परिचितों ने सामूहिक दुष्कर्म किया। बाद में बचाव के लिए चिल्ला रही पीड़िता को एक राहगीर ने मदद के नाम पर अपनी हवस का शिकार बना लिया। ये दो शर्मनाक घटनाएं तो महज उदाहरण हैं। पूरे देश में रोजाना न जाने कितनी मासूम बच्चियां नर पिशाचों का शिकार होती हैं। ज्यादातर मामले पुलिस या कानून के संज्ञान में ही नही आते।कुछ आते भी हैं तो उन्हें तमाम कानूनी और सामाजिक पेचीदगियों का हवाला देकर रफा-दफा करने के प्रयास किए जाते हैं। निर्भया कांड के बाद सड़क से संसद तक हुए बवाल के बाद दुष्कर्मियों को फांसी की सजा का कानून बना। लेकिन, आज तक कितनों को फांसी हुई? कानून की क्रियान्विति में इतने झोल छोड़ दिए जाते हैं कि कई साल सुनवाई और अपीलों में ही निकल जाते हैं। दुष्कर्म के मामलों में फास्ट ट्रेक अदालतों में समयबद्ध फैसले हों और कड़ी से कड़ी सजा मिले तो हैवानियत में कमी की उम्मीद की जा सकती है। यह बेहद शर्मनाक है कि देश में महिलाओं के खिलाफ हिंसा की घटनाएं बढ़ रही हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) ने हाल ही में 2016 में देश भर में हुए अपराधों के आंकड़े जारी किए हैं, जिसके अनुसार महिलाओं के प्रति हिंसा के 2016 में 3,38,954 मामले दर्ज किए गए, जो 2015 (3,29,243) केमुकाबले 2.9 प्रतिशत ज्यादा हैं। इनमें 14.5 प्रतिशत मामले उत्तर प्रदेश में, 9.6 प्रतिशत पश्चिम बंगाल में हुए। आपराधिक मामलों में उत्तरप्रदेश सबसे आगे है। वहां महिला प्रताड़ना (घरेलू हिंसा) के 1,10,378 एवं यौन हमले के 84,746 मामले दर्ज हुए। देश में दुष्कर्म के मामले 2015 की तुलना में 2016 में 12.4 प्रतिशत बढ़े हैं। 2016 में देश में 38,947 दुष्कर्म के मामले दर्ज हुए। सबसे ज्यादा 4,882 मध्यप्रदेश में हुए। दूसरे नंबर पर उत्तरप्रदेश रहा, जहां 4,816 दुष्कर्म के मामले दर्ज हुए। इस मामले में महाराष्ट्र तीसरे नंबर पर रहा, जहां 4,189 मामले दर्ज हुए। राजसीान चौथे नंबर पर है। 2016 में यहां 3657 केस दर्ज हुए। महिलाएं घर से सड़क तक हिंसा का शिकार हैं। वे आसान शिकार मानी जाती हैं और बीते एक दशक में महिलाओं के प्रति हिंसा बढ़ी है। कड़े कानून बने हैं लेकिन इनका भी ज्यादा असर नहीं। हमारी सरकारें यह कब समझेंगी कि बाल विवाह, गिरता लिंगानुपात, महिला शिक्षा की चरमराई स्थिति की वजह महिलाओं में असुरक्षा की भावना पनप रही है। आगे चलकर यह देश की जीडीपी को भी विपरीत तौर पर प्रभावित करती है। मातृ: देवो भव: की अवधारणा के भारत में यह मान्यता रही है कि जिस जगह स्त्रियों का सम्मान होता है, वहां देवता निवास करते हैं। लेकिन, जहां महिलाएं पीड़ित होती हैं, उस कुल का विनाश हो जाता है। नवरात्र में घर-घर में कन्या पूजन वाले हमारे देश में महिलाओं का खुले-आम चीर-हरण होता है परंतु समाज मूक दर्शक बना रहता है। कम उम्र में यौन हादसों का शिकार बनी बच्चियां तो जीवन भर किसी पर भरोसानहीं कर पाती। इन दुर्भाग्यपूर्ण हादसों के चलते माता-पिता के मन में उपजने वाला भय भी बेटियों के पूरे भविष्य को प्रभावित करता है। दुष्कर्म कोई साधारण अपराध नहीं है। प्रतिष्ठा के हनन से लेकर मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक टूटन तक सब कुछ झेलना पड़ता है। परंतु, जब अपराधी बच निकलते हैं या मामूली सजा पाकर ऐसे अपराधों को अंजाम देने के लिए समाज में खुले घूमते हैं तब पीड़ित स्त्री टूट जाती है। ऐसे कई मामले सामने आ चुके हैं, जब एक बार दुष्कर्म जैसा घिनौना अपराध करने के बाद नाममात्र की सजा पाकर अपराधी ने फिर से वैसा ही अपराध करने का दुस्साहस किया है। उसे सजा से कोई सबक नहीं मिल सका। महिलाओं के प्रति आपराधिक प्रवृत्ति रखने वालों के बढ़ते दुस्साहस और नकारात्मक सोच के लिए सजा की सख्ती का संदेश जरूरी है। समाज को भी ऐसे यौन अपराधियों के खिलाफ गोलबंद होना चाहिए।

मानवाधिकार के प्रति छात्र-छात्राओं ने लोगों किया जागरूक, बोले...

अपने अधिकार के लिए आपको ही उठाने होंगे कदम

बर्फखाना। जब तक आप लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होंगे तब तक कुछ भी संभव नहीं, इसलिए अपने अधिकारों के लिए आपलोगों को ही आगे आना होगा। हाल ही महर्षि दयानन्द लॉ कॉलेज की ओर से विधिक जागरुकता अभियान के तहत प्राचार्य चन्द्रशेखर दीक्षित के मार्गदर्शन में जवाहर नगर कच्ची बस्ती में विधिक जागरुकता शिविर लगाया गया।

इस दौरान बड़ी संख्या में बस्ती के लोगों को उनके अधिकारों से अवगत कराया गया। शिविर में विधि के छात्रों की ओर से बस्ती में रहने वाले लोगों को अपने अधिकारों से अवगत कराया गया और उनके विधिक मामलों में राय दी गई।

अभियान की शुरुआत में छात्रों ने लोगों और बस्ती के रहवासियों को मानवाधिकार के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम को विधिक सेवा क्लिनिक के संयोजक डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, उप-संयोजक डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा व रितु पाटीदार ने सफल बनाने में सहयोग किया।

सेवा योजना के उद्देश्यों को जानें

इसी तरह प्राचार्य चन्द्र शेखर दीक्षित के तत्वावधान में राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर का समापन समारोह हाल ही संपन्न हुआ। इसमें मुख्य अतिथि कॉलेज के प्रशासनिक अधिकारी व आर्य समाज के सचिव चक्रकीर्ति सामवेदी, मधु यादव ने छात्रों को शिविर के सफल संचालन के लिए बधाई देते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। शिविर का संचालन डॉ. मोनिका शर्मा व भरत सिंह की ओर से डॉ. शैलेन्द्र जोशी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. आई.पी. बैरवा व रितु पाटीदार के निर्देशन में किया गया। इस दौरान सेवा से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों के बारे में छात्रों को अवगत कराया गया। वहीं सेवा के उद्देश्यों की जानकारी भी दी गई।

नहीं मिल पाया खाद्य सुरक्षा का स्थायी हल

भारत ने प्रारंभ में ही स्पष्ट कर दिया था कि सार्वजनिक खाद्य भंडारण के मुद्दे से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। यह भारत के 60 करोड़ उन लोगों की खाद्य सुरक्षा का मुद्दा है जो सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर निर्भर करते हैं।

डॉ. अश्विनी महाजन
आर्थिक मामलों के जानकार

अर्जेंटीना में सम्पन्न विश्व व्यापार संगठन की बैठक बिना किसी नतीजे के समाप्त हो गई। भारत सहित दुनिया के कई देश जो सार्वजनिक खाद्य भंडारण के मुद्दे पर स्थायी समाधान चाहते थे, उन्हें इस बैठक से खाली हाथ लौटना पड़ा। वर्ष 2015 के मंत्री स्तीरय नैरोबी सम्मेलन में सभी सदस्य देशों ने तय किया था कि वर्ष 2017 तक इस मुद्दे का स्थायी हल खोज लिया जाएगा। लेकिन अमरीका ने स्वयं के वायदे को नकारते हुए इस बार यह स्पष्ट कर दिया कि वह इस मुद्दे का हल नहीं देगा। यानी अमरीका ने ब्यूनर्स आयर्स सम्मेलन को विफल कर दिया। सम्मेलन से बहुत पहले ही स्पष्ट हो गया था कि नैरोबी सम्मेलन में तय मुद्दों के इतर अमरीका और कई अन्य विकसित देश दूसरे मुद्दों में रुचि दिखा रहे हैं। विकसित देश ई-कॉमर्स, निवेश सुविधा और मत्सयन सब्सिडी आदि विषयों को विश्व व्यापार संगठन की विषय सूची में शामिल करना चाहते थे। वे चाहते थे कि इन विषयों को (जो पहले से विश्व व्यापार संगठन के मुद्दों में शामिल नहीं थे) शामिल करते हुए उन पर आगे बढ़ा जाए। गौरतलब है कि विश्व व्यापार संगठन में किसी भी नए मुद्दे को शामिल करने के लिए सभी सदस्य देशों का एक राय होना जरूरी है। यानी एक देश भी यह नहीं चाहता कि कोई मुद्दा शामिल हो, तो वह उसे रोक सकता है। इसी नियम के आधार पर ऐसे मुद्दे, जिनसे विकासशील देशों को नुकसान की आशंका होती थी, उन्हें रोक दिया जाता था। हालांकि कई बार विकसित देश दबाव बनाकर कई मुद्दों को शामिल करवाने में कामयाब भी रहे। भारत ने सम्मेलन के प्रारंभ में ही स्पष्ट कर दिया था कि सार्वजनिक खाद्य भंडारण के मुद्दे से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। यह मुद्दा भारत के 60 करोड़ उन लोगों की खाद्य सुरक्षा का मुद्दा है जो सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर निर्भर करते हैं। साथ ही मत्स्य सब्सिडी खात्मे पर भारत का मत है कि हमारे यहां मछली पालन परंपरागत तरीके से होता है। मछुआरों के पास मछली पकड़ने की परपंरागत विधियां ही हैं। इसलिए उनकी सरकारी मदद कई बार करना जरूरी होता है। इस बात को देखते हुए कोई भी नया समझौता करते हुए उनके हितों का ध्यान रखना जरूरी होगा। एक तरफ भारत जैसे देशों को खाद्य सुरक्षा का स्थायी हल नहीं मिल पाया और पुरानी 'पीस क्लॉज' से ही संतोष करना पड़ा है पर इन देशों ने अमीर मुल्कों की किसी चाल को कामयाब नहीं होने दिया और नए मुद्दों को सिरे से नकार कर दुनिया के विकासशील देशों को अमीर मुल्कों के जाल में फंसने से फिलहाल बचा लिया है।

किसे जरूरत है बुजुर्गों की ?

-: अशोक राही :-

किसे जरूरत है बूढ़ों की। कम से कम आज के समाज को तो कतई नहीं है। एक जमाने में बूढ़े देश के 'प्रॉपर्टी' हुआ करते थे। आज के बेटों की नजर बूढ़े की 'प्रॉपर्टी' पर होती है। कब आंखें बंद करें और कब उसकी जायदाद के बत्ती लगाकर मजे लूटे। आप मिथक कथाओं, पौराणिक कहानियों, लोककथाओं व चौपालों में चलती बातों को ध्यान से पढ़े-सुने तो पता चलेगा कि बुड्ढों ने क्या-क्या जलवे दिखाए हैं। अकेला बुजुर्ग देवव्रत भीष्म पूरे दस दिन तक कौरव-पांडव महासंग्राम में सब पर भारी रहा था। अगर वो खुद मरने की तरीका नहीं बताता तो योगेश्वर कृष्ण के वरदहस्त के बावजूद उस बूढ़े के रहते पांडव कभी रण नहीं जीत पाते। आज के राजनीतिक दल जिस युवा नेतृत्व को लेकर गाल बजा रहे हैं। उन्हें भी बूढ़ों ने अपने पसीने से सींचा है। देश का सबसे पुराना राजनीतिक उस बुजुर्ग गांधी को भुनाता रहता है जिसे गोली मार दी गई थी। दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल होने का दावा करने वाली भाजपा की जड़ों को दो बुजुर्गों- लालकृष्ण आडवाणी और अटल बिहारी वाजपेयी ने तब बचाया, जब देश में पार्टी सिमट कर दो के आंकड़े पर पहुंच गई थी। आज आडवाणी जी का क्या हश्र हो रहा है। यह कथा सिर्फ एक आडवाणी जी की नही है। आज घर-घर में आडवाणी बैठे हुए हैं। बुड्ढे आज हाशिये पर हैं। उनके अनुभवों को 'आउट ऑफ डेट' कह कर खारिज कर दिया जाता है। अजी बूढ़े मनुष्यों को छोड़ो, अब तो बूढ़े बरगद तक को काटा जा रहा है। तीन सौ साल पुराने बरगद को विस्थापित करने की चाल चली जा रही है। जो आज जवान है उसका कल बूढ़ा होना निश्चित है। आज दुनिया में सबसे ज्यादा नौजवान भारत में हैं लेकिन उस दिन की भी सोचो जब सबसे ज्यादा बूढ़े भारत में होंगे। जो समाज, परिवार या पार्टी बूढ़ों की कद्र नहीं करेगी। उसका एक दिन नष्ट होना तय है। बूढ़े भीष्म के शरशैया पर गिरते ही दुर्योधन युद्ध हार गया था।

स्वतंत्रता सेनानियों की आवाज का बनाया संग्रहालय

पुस्तक का विमोचन करेंगे शहीद भगत सिंह के भतीजे

सादुलपुर। इरादा पक्का और नेक हो तो कोई काम नामुमकिन नहीं होता, ऐसा ही कुछ कर दिखाया है गांव गुडाण के स्वतंत्रता सेनानी चौधरी बलराम आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक हवासिंह आर्य ने। जिन्होंने देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों का एक दुर्लभ संग्रहालय का निर्माण किया है। जिसमें उनको 40 वर्ष लगे।

आर्य ने बताया कि उनका लक्ष्य था कि देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले एवं शहादत देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों की प्रेरणा भावी नौजवान पीढ़ियों को मिले। जिसके लिए उन्होंने गत चालीस वर्षों के अथक प्रयास से लगभग डेढ़ सौ स्वतंत्रता सेनानियों की आप बीती कहानी एवं स्वतंत्रता सेनानियों की जुबानी कैसेट रिकॉर्ड कर आंदोलन में घटित घटनाओं का उल्लेख किया है। तहसील एवं शेखावाटी क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों की आवाज रिकॉर्ड कर आंदोलन में उनके साथ घटित घटनाओं की जानकारी ली है। उन्होंने बताया कि बीकानेर रियासत के सैनानियों का अभूतपूर्व संग्रहालय तैयार किया है।

मुंह बोलती कहानियां

इसके अलावा बीकानेर रियासत के स्वतंत्रता सेनानियों की मुंह बोलती कहानी नामक पुस्तक लिखी है। जिसमें अंग्रेजों के अत्याचारों की कहानी और जुबानी का उल्लेख किया गया है।

नौजवानों को करेंगे प्रेरित

संग्रहालय में रिकॉर्डिंग सुनने के लिए विशेष व्यवस्था की है। युवा स्वतंत्रता संग्राम का वर्णन सुनकर देशभक्ति की ओर प्रेरित होंगे। हवासिंह ने बतायाकि 28 दिसंबर को स्वतंत्रता सेनानियों की मुंह बोलती कहानी नामक पुस्तक का विमोचन एवं चौधरी बल्लाराम आर्य की प्रतिमा का अनावरण शहीद भगतसिंह के भतीजे सरदार किरणजोत सिंह करेंगे। जिसकी तैयारियां शुरू कर दी हैं।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल एवं अशफाक उल्ला खां बलिदान दिवस समाचार पत्रों के दर्पण में

पं. रामप्रसाद बिस्मिल एवं काकोरी कांड के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

'शहीदों से प्रेरणा लें, करें देश का विकास'

वरिष्ठ साहित्यकार नंद भारद्वाज ने किया युवाओं का आह्वान

जयपुर। वैदिक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सरफरोशी की तमन्ना के अमर गायक पं. रामप्रसाद बिस्मिल एवं काकोरी कांड के शहीदों अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह और राजेन्द्र नाथ लहड़ी का बलिदान दिवस मनाया गया।

दूरदर्शन के पूर्व निदेशक एवं साहित्यकार नंद भारद्वाज ने शहीदों के प्रेरणादायक जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 19वीं शताब्दी में आर्य समाज की प्रेरणा से हजारों नवयुवकों ने देश की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे दी। शहीद होने वाले नवयुवकों में रामप्रसाद बिस्मिल भारतवर्ष के युवकों का प्रेरणास्त्रोत बना और उसके देशभक्ति के गीतों ने भारतवर्ष के नवयुवकों को देश के लिए बलिदान देने की प्रेरणा दी। आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि वर्ष 1857 की क्रांति के बाद देश के लिए फांसी पर चढ़ने वाले काकोरी कांड के शहीद थे, जिनकी आयु 30 वर्ष से भी कम थी। बिस्मिल ने देश के नाम लिखे अपने संदेश में छुआछूत, स्त्रियों के अधिकार, विद्यालयों में उद्योग पीठ एवं शिल्प विद्यालय खोलकर कला कौशल भवनों की स्थापना करने समेत कई बातें कहीं। बिस्मिल ने अपने अंतिम संदेश में कहा कि हिन्दू-मुस्लिम एकता ही उनकी अंतिम इच्छा है। अशफाक उल्ला कट्टर मुसलमान होकर पक्के आर्य समाजी रामप्रसाद क्रांतिकारी दल के दाहिना हाथ बने। महाविद्यालय की छात्राओं ने सरफरोशी की तमन्ना, मेरा रंग दे बसंती चोला आदि देशभक्ति गीतों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

काकोरी के शहीदों से लें प्रेरणा

जयपुर। वैदिक कन्या पीजी कॉलेज (राजापार्क) में मंगलवार को बलिदान दिवस मनाया गया। क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल, काकोरी कांड के शहीदों अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह व राजेंद्र लहड़ी की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने काकोरी कांड के शहीदों की जीवनी से प्रेरणा लेने पर जोर दिया।

राजस्थान पत्रिका

साहित्यकार नंद भारद्वाज ने कहा कि आर्य समाज की प्रेरणा से हजारों युवाओं ने देश की बलिवेदी पर प्राणों की आहुति दी। युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत बने बिस्मिल के देशभक्ति से ओत-प्रोत गीतों ने युवाओं को देश के लिए बलिदान होने की प्रेरणा दी। आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि काकोरी कांड में शहीद हुए युवाओं की आयु 30 वर्ष से भी कम थी। देश के नाम लिखे संदेश में बिस्मिल ने स्त्रियों की दशा सुधारने, शहरी विलासी जीवन छोड़ गांवों में जनजागरण अभियान चलाने एवं विद्यालयों में उद्योग पीठ व शिल्प विद्यालय खोलने संदेश दिया था।

काकोरी कांड के शहीदों से देशभक्ति की प्रेरणा लें-नंद भारद्वाज

जयपुर। वैदिक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सरफरोशी की तमन्ना के अमर गायक पं. रामप्रसाद बिस्मिल एवं काकोरी कांड के शहीदों, अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह, राजेन्द्र नाथ लहड़ी का बलिदान दिवस मनाया गया। दूरदर्शन के पूर्व निदेशक एवं प्रसिद्ध साहित्यकार नंद भारद्वाज ने शहीदों के प्रेरणादायक जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 19वीं में आर्य समाज की प्रेरणा से हजारों नवयुवकों ने देश की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे दी। शहीद होने वाले नवयुवकों में रामप्रसाद बिस्मिल भारतवर्ष के युवकों का प्रेरणास्त्रोत बना और उसके देशभक्ति के गीतों ने भारतवर्ष के नवयुवकों को देश के लिए बलिदान देने की प्रेरणा दी। आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि 1857 की क्रांति के बाद देश के लिए फांसी पर चढ़ने वाले काकोरी कांड के शहीद थे, जिनकी आयु 30 वर्ष से भी कम थी। बिस्मिल ने देश के नाम लिखे अपने संदेश में स्त्रियों की दशा को सुधारने के लिए लिखा कि स्त्रियों को पैर की जूती तथा घर की गुड़िया न समझी जाए। स्त्रियों की दशा भी इतनी सुधारी जाए कि वे अपने आप को मनुष्य जाति का अंग समझने लगें। (समाचार जगत)

काकोरी कांड के शहीदों से देशभक्ति की प्रेरणा लें युवा

जयपुर। वैदिक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजापार्क में मंगलवार को सरफरोशी की तमन्ना गीत के अमर गायक पं. रामप्रसाद बिस्मिल एवं काकोरी कांड के शहीदों अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह, राजेन्द्रनाथ लहड़ी का बलिदान दिवस मनाया गया। इस मौके पर दूरदर्शन के पूर्व निदेशक एवं साहित्यकार नंद भारद्वाज ने शहीदों के प्रेरणादायक जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 19वीं शताब्दी में आर्य समाज की प्रेरणा से हजारों नवयुवकों ने देश की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे दी। शहीद होने वाले नवयुवकों में रामप्रसाद बिस्मिल भारतवर्ष के युवकों का प्रेरणास्त्रोत बना और उसके देशभक्ति के गीतों ने भारतवर्ष के नवयुवकों को देश के लिए बलिदान देने की प्रेरणा दी।

वैदिक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में कार्यक्रम

पंजाब केसरी

शोषण से दिलाएं मुक्ति

: उस वक्त पं. रामप्रसाद ने फांसी के तख्ते से देश के युवाओं के नाम संदेश में कहा था कि क्रांतिकारी संगठन करने की अपेक्षा जनता की प्रवृत्ति को देशसेवा की और लगाने का प्रयत्न करें। श्रमजीवी तथा कृषकों का संगठन बनाकर, उनको जमीदारों तथा रईसों के अत्याचारों से बचाएं। वहीं, पं. बिस्मिल ने कहा था कि ग्रामीण संगठन बनाकर कृषकों की दशा को सुधारें।

काकोरी कांड के शहीदों से देशभक्ति की प्रेरणा लें

आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि 1857 की क्रांति के बाद देश के लिए फांसी पर चढ़ने वाले काकोरी कांड के शहीद थे जिनकी आयु 30 वर्ष से भी कम थी। बिस्मिल ने देश के नाम लिखे अपने संदेश में कहा कि स्त्रियों की दशा भी इतनी सुधारी जाए कि वे अपने आप को मनुष्य जाति का अंग समझने लगे।

राजापार्क। वैदिक कन्या पीजी महाविद्यालय में सरफरोशी की तमन्ना के अमर गायक पं. रामप्रसाद बिस्मिल व काकोरी कांड के शहीदों- अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह, राजेन्द्र नाथ लहड़ी- का बलिदान दिवस मनाया गया। इसमें साहित्यकार नंद भारद्वाज ने शहीदों के प्रेरणादायक जीवन पर प्रकाश डालते हुए बतायाकि 19वीं शताब्दी में आर्य समाज की प्रेरणा से हजारों नवयुवकों ने देश की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे दी। शहीद होने वाले नवयुवकों में रामप्रसाद बिस्मिल भारतवर्ष के युवकों का प्रेरणास्त्रोत बने और उनकी देशभक्ति के गीतों ने भारतवर्ष के नवयुवकों को देश के लिए बलिदान देने की प्रेरणा दी। आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि 1857 की क्रांति के बाद देश के लिए फांसी पर चढ़ने वाले काकोरी कांड के शहीद थे जिनकी आयु 30 वर्ष से भी कम थी। बिस्मिल ने देश के नाम लिखे अपने संदेश में कहा कि स्त्रियों की दशा भी इतनी सुधारी जाए कि वे अपने आप को मनुष्य जाति का अंग समझने लगे। भारतवर्ष के युवकों को प्रेरित किया जाए कि वे ग्राम संगठन बनाए और शहरी विलासी जीवन छोड़कर गांवों में तपस्वी जीवन व्यतीत करके जनजागरण अभियान चलाएं।

शहादत को याद करें

सामवेदी ने कहा कि बिस्मिल ने इस बात पर भी जोर दिया कि विद्यालयों में उद्योग पीठ व शिल्प विद्यालय खोले जाएं तथा कला कौशल भवनों की स्थापना करें। आजादी के 70 वर्ष बाद इन शहीदों के सपनों को हम सुने और उन सपनों के अनुसार देश को बनाए तभी देश का कल्याण हो सकता है। बिस्मिल ने अपने अंतिम संदेश में कहा कि हिन्दू-मुस्लिम एकता ही हम लोगों की यादगार तथा अंतिम इच्छा है चाहे वह कितनी कठिनता से क्यों न प्राप्त हो। सरकार ने अशफाक उल्ला को रामप्रसाद का दाहिना हाथ करार दिया। अशफाक उल्ला कट्टर मुसलमान होकर पक्के आर्य समाजी रामप्रसाद क्रांतिकारी दल के दाहिना हाथ थे। इस दौरान महाविद्यालय की छात्राओं ने सरफरोशी की तमन्ना, मेरा रंग दे बसन्ती चोला आदि देशभक्ति के गीतों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

संस्कृति युवा संस्था ने सत्यव्रत सामवेदी को राजस्थान गौरव-2017 से सम्मानित किया

जयपुर। आज श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर संस्कृति युवा संस्था के अध्यक्ष पं. सुरेश मिश्रा ने आर्य समाज के अध्यक्ष सत्यव्रत सामवेदी को राजस्थान गौरव सम्मान से सम्मानित किया।

सामवेदी ने पं. सुरेश मिश्रा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि दिनांक 16 दिसम्बर को संस्कृति युवा संस्था ने 41 विभूतियों को राजस्थान गौरव से सम्मानित किया था। इस कार्यक्रम में पं. सुरेश मिश्रा ने मुझे भी सम्मिलित करने के लिए आमंत्रित किया परंतु मैं अस्वस्थता का बहाना बना कर सम्मिलित होने नहीं गया। मेरे ना जाने का कारण यह था कि मैं अपने को राजस्थान गौरव सम्मान के योग्य नहीं मानता था। मैं तो हमेशा अपने

लिए यही कहता हूँ- **मौसम कौन कुटिल खलकामी**

दिग्विजयी शंकराचार्य ने भी अपने लिए यही कहा- कुकर्मी, कुसंगी, कुबुद्धि, कुदासा: सदाचारहीना कदाचारलीना। परंतु आज श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर

मुझे राजस्थान गौरव से सम्मानित करने के लिए पं. सुरेश मिश्रा एवं सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय के संयुक्त निदेशक श्री गोविन्द पारीक इस कार्यक्रम में ही आ गए। मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने मुझ जैसे नाचीज को राजस्थान गौरव सम्मान से नवाजा। श्री गोविन्द पारीक ने इस अवसर पर कहा कि स्वामी श्रद्धानंद द्वारा स्थापित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सत्यव्रत सामवेदी कार्यकारी प्रधान हैं। स्वामी श्रद्धानंद के कांटों का ताज सामवेदी जी के सिर पर है। वेदों पर एवं गीता पर सामवेदी जी के प्रवचन सुन कर जयपुर जैसी पौराणिक नगरी कितनी मुग्ध है उसे प्रत्येक आर्य समाजी जानता है। हमें उनकी विद्वता पर गर्व है।

इस अवसर पर पं. सुरेश मिश्रा ने कहा कि वेदों पर प्रवचन सुनकर मैं उनके प्रति अनेक वर्षों से श्रद्धाभाव रखता हूँ। जयपुर का ब्राह्मण समाज उनके प्रवचनों को सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाता है। मेरी दृष्टि में राजस्थान गौरव सम्मान के लिए सामवेदी जी सर्वाधिक योग्य व्यक्ति हैं। अत: श्रद्धानंद बलिदान दिवस के अवसर पर उन्हें राजस्थान गौरव सम्मान से सम्मानित करके हम अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं।

॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शांति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रांति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र
आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।

सम्पादक मण्डल
चक्रकीर्ति सामवेदी, घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M :9929804883, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
Vishwamaryam@rediffmail.com

आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति, आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

डाक टिकट

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
JaipurCity/250/2015-17

प्रेषित : ....

-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.